साहित्य से समझने का बेहतर मंच

जर्मनी स्थित लिटेरातुर फोरुम विगत कई वर्षों से भारतीय प्रायद्वीप और दक्षिण एशियाई देशों की साहित्यिक, सांस्कृतिक और सामाजिक जीवन-झाँकी को साहित्य के जरिए समझने और समेटने का एक अनुकरणीय प्रयास कर रहा है।

■ डॉ० ए० वाइस, जर्मनी

जर्मनी स्थित लिटेरातुर फोरुम विगत कई वर्षों से भारतीय प्रायद्वीप और दक्षिण एशियाई देशों की साहित्यिक, सांस्कृतिक और सामाजिक जीवन-झाँकी को साहित्य के जरिए समझने और समेटने का एक अनुकरणीय प्रयास कर रहा है। इसके तीन दिन चलने वाले सेमिनारों में बौद्धिक ही नहीं, बल्कि अन्य समाजों और उनकी स्थिति को रचनात्मता के जरिए समझने का व्यवहारिक चिन्तन भी शामिल होते हैं। फोरुम भारतीय प्रायद्वीप और दक्षिण एशियाई देशों को उसके साहित्य के माध्यम से समझने का एक बेहतर मंच मुहैया करा रहा है।

लिटेरातुर फोरुम इंडिया की स्थापना सन् 2006 में की गई थी। यह एक अलाभकारी गैर सरकारी पंजीकृत स्वैच्छिक संस्था है जिसे कुछ भारतविद्या प्रेमी उत्साही जर्मन विद्वानों ने मिलकर गठित किया है। फोरम विगत 2007 से भारतीय प्रायद्वीप और दक्षिण एशियाई देशों की साहित्यिक-सांस्कृतिक गतिविधियों से परिचित करवा रहा है। लिटेरातुर फोरुम का उद्देश्य जर्मनभाषी देशों में भारतीय प्रायद्वीप और दक्षिण एशियाई देशों के साहित्य, कला, संस्कृति आदि के प्रचार-प्रसार और उनकी वास्तविक तस्वीर प्रस्तुत करना है।

फोरम को गठित करने में जोस पुन्नापराम्बिल, क्रिटियन वाइस, स्व. निर्मलेन्दु सरकार, प्रो. डॉ. अन्ना कुट्टी वलियामंगलम-फिन्डअइस आदि ने मिलकर

> "भारतीय प्रायद्वीप के बारे में अभी भी बहुत कुछ जानना बाकी है क्योंकि वह बड़ा और सांस्कृतिक रूप से सम्पन्न देशों में से एक है।"-राइनहोल्ड,
> कार्यकारी अध्यक्ष,लिटेरातुर फोरुम

किया। जोस पुन्नमपराम्बिल जर्मनी की बहुचर्चित पत्रिका 'माइन वेल्ट' -मेरी दुनिया- में लम्बे समय तक सम्पादक रहे हैं और क्रिटियन वाइस जर्मनी स्थित द्रौपदी प्रकाशन के प्रमुख, प्रो. डॉ. अन्ना कुट्टी जर्मनविद्, भारत विद्याविद् और कवियत्री हैं। भारत विद्याविद् डॉ. इनेस फॉर्नेल, ग्योटिंगेन के विश्वविद्यालय में इण्डोलॉजी विभाग में व्याख्याता हैं। फोरम को मजबूत करने में उपसला विश्वविद्यालय स्वीडन के डॉ. हेन्स वार्नर, साहित्य-विज्ञानी प्रो. इन्दु प्रकाश पाण्डेय और उनकी पत्नी श्रीमती हाइडीमेरी पाण्डेय आदि बड़ी तन्मयता से काम कर रहें हैं। पाण्डेय दम्पत्ति ने हिन्दी से जर्मन में कई बेहतर अनुवाद कर चुके हैं। हालाँकि भारत में लिखा जा रहा अँगरेजी साहित्य पूरी दुनिया में अब अपनी पहचान बना चुका है लेकिन हिन्दी, तमिल, मलयालम, बंगला, उर्दू, मराठी समेत अन्य भारतीय भाषाओं और दक्षिण एशिया के अन्य भाषाओं के साहित्य से जर्मनभाषी अभी कम परिचित हैं। लिटेरातुर फोरुम का उद्देश्य है कि जर्मनभाषी देशों को भारतीय प्रायद्वीप और दक्षिण एशियाई देशों के साहित्यिक, सांस्कृतिक अवदान से परिचित कराया जाये जिससे इनके साहित्य में रचित इन देशों के समाजों की सही झाँकी जर्मनवासियों के सामने खुल सके। इसीलिए यह फोरम छोटे प्रकाशकों को भी अनुवाद व प्रकाशन के लिए अनुदान मुहैया कराता है, खासतौर पर समकालीन लेखकों की रचनाओं के सन्दर्भ में। इससे भारतीय प्रायद्वीप के जनजीवन और सांस्कृतिक विविधता की स्पष्ट तस्वीर जर्मनवासियों के सामने प्रस्तुत हो पा रही है। हिन्दी की कई रचनाओं, उपन्यासों और कहानियों का जर्मनभाषा में लगातार अनुवाद व प्रकाशन चल रहा है। इसी के तहत कवियत्री गीतांजलि श्री के उपन्यास 'माई' का जर्मन अनुवाद राइनहोल्ड शाइन ने किया है। राइनहोल्ड

लिटेरातुर फोरुम ए.फऊ., जर्मनी

लिटेरातुर फोरुम के कार्यकारी अध्यक्ष हैं। इसी तरह हिन्दी के प्रख्यात कथाकार उदय प्रकाश का उपन्यास 'द गोल्डन वेस्ट चेन' जिसका जर्मन अनुवाद लोठार लुत्से ने किया है। स्व०प्रो०डा० लुत्से जर्मनी के हाइडलबर्ग विश्वविद्यालय में आधुनिक भारतीय भाषाओं के प्रोफेसर थे। इसी तरह उदय प्रकाश का एक अन्य चर्चित उपन्यास 'मोहनदास' का भी जर्मन अनुवाद हाइडलबर्ग विश्वविद्यालय में आधुनिक दक्षिण एशियाई अध्ययन विभाग के व्याख्याता गौतम लियु और ग्योटिंगेन के विश्वविद्यालय में इण्डोलॉजी विभाग की व्याख्याता डॉ. इनेस फॉर्नेल ने मिलकर किया। गीताजंलि श्री और उदय प्रकाश, दोनों हिन्दी लेखकों को लिटेरातुर फोरुम ने पुस्तक-पाठ के लिए

लिटेरातुर फोरुम का उद्देश्य है कि जर्मनभाषी देशों को भारतीय प्रायद्वीप और दक्षिण एशियाई देशों के साहित्यिक, सांस्कृतिक अवदान से परिचित कराया जाये जिससे इनके साहित्य में रचित इन देशों के समाजों की सही झाँकी जर्मनवासियों के सामने खुल सके।

जर्मनी आमंत्रित भी किया था।

सन् 2007 से यह फोरुम विभिन्न विद्वानों और भारत प्रेमियों के सहयोग से सेमिनार और कार्यशालाएं आयोजित कराता रहता है। इसमें यूरोप और दक्षिण एशिया से जुड़े विभिन्न साहित्यिक-सांस्कृतिक और सामाजिक विषयों पर बहसें और कार्यशालाएं आयोजित होती रही हैं। इसी परिप्रेक्ष्य में गत वर्ष 2017 में 'मॉर्डन थियेटर इन इंडिया' का आयोजन किया गया। इस सेमिनार में भारत और जर्मनी के कई विश्वविद्यालयों से विद्वानों को आमंत्रित किया गया था, जिन्होंने भारत में आधुनिक रंगमंच पर चल रहे विभिन्न भाषाओं के नाटकों पर उसके विभिन्न आयामों को लेकर व्याख्यान दिये। उदाहरण के तौर पर 'केरल में जीवित संस्कृत रंगमंच' (प्रजेनटेशन प्रो.डॉ. हाइके ओबरलीन) और 'आधुनिक मराठी थियेटर' (प्रजेनटेशन: प्रो. डॉ. मंजरी परांजपे) से लेकर 'अजय शुक्ला के ऐतिहासिक कॉमेडीज' (प्रजेनटेशन: प्रो.डॉ. तातियाना ओरंस्काया, हैम्बर्ग) और 'बंगाल में जात्रा थियेटर' (प्रजेनटेशन:डॉ. हंस.मार्टिन कुन्स, हाइडेलबर्ग) इसी तरह भारत से पत्रकार और इंडिया इनसाइड के सम्पादक अरुण सिंह ने मोहन राकेश के नाटक 'आधे-अधूरे' तथा डॉ. इनेस फॉर्नेल ने हिन्दी के प्राख्यात साहित्यकार डॉ. धर्मवीर भारती के बहुचर्चित नाटक 'अंधा-युग' पर अपना प्रजेनटेशन दिया। अगला वार्षिक सेमिनार 25 से 27 मई, 2018 को प्रस्तावित है जो जर्मनी के नार्थ राइन वेस्ट फालिया राज्य के फिलिग्स्ट शहर में होगा। यह सेमीनार 'दक्षिण एशिया में मेगासिटीज:सामाजिक और धार्मिक संघर्ष के हॉटस्पॉट' विषय पर होना है। एक सवाल के जवाब में लिटेरातुर फोरुम के कार्यकारी अध्यक्ष राइनहोल्ड कहते हैं, "भारतीय प्रायद्वीप के बारे में अभी भी बहुत कुछ जानना बाकी है क्योंकि वह बड़ा और सांस्कृतिक रूप से सम्पन्न देशों में से एक है।"

इस तरह जर्मनी स्थित लिटेरातुर फोरुम लगातार भारतीय प्रायद्वीप और दक्षिण एशियाई देशों की साहित्यक, सांस्कृतिक और सामाजिक जीवन झाँकी को समझने और समेटने का एक अनुकरणीय प्रयास कर रहा है। इसके तीन दिन चलने वाले सेमिनारों में बौद्धिक ही नहीं बल्कि व्यवहारिक चिन्तन भी शामिल होते हैं। लिटेरातुर फोरुम विगत कई वर्षों से हमें समझनें का एक बेहतर मंच मुहैया करा रहा है।

-साथ में **अरुण सिंह**

लिटेरातुर फोरुम के सहयोग से अनूदित और प्रकाशित पुस्तकें

- 2008, उदय प्रकाश: देर गोल्डेने गुएरटेल (सुनहरा बेल्ट कहानी संग्रह: हिन्दी से जर्मन में अनुवाद। अनुवादक: लोठार लुत्से)।
- 2009, डीटर बी. कप्प (सम्पादक) देर उर्सप्रुंग दस रेगेन वोगेन्ज़। इंद्रधनुष की उत्पत्ति (तमिलनाडु के अलु-कुरुम्बा के मिथक)।
- 2010, गीताजंलि श्री: माई (उपन्यास, अनुवादक: राइनहोल्ड शाइन)।
- 2011, सलमा: दी शुंदे नाख मिट्टरनाख्त (आधी रात के बाद का घंटा, तमिल उपन्यास। इसका अंग्रेजी से अुनवाद इंग्रिड फान हाइसलर)।
- 2012, ओ.एन.वी. कुरूप: आइन ट्राप्फेन लिख्त (प्रकाश की एक बूंद, कविता संग्रह, इसका अनुवाद मलयालम से अन्नाकुट्टी वलियामंगलम-फिन्डअइस ने किया)।
- 2013, महाश्वेता देवी: दास ब्राहमानेनमेद्छेन उंद देर ज़ोन देस बोत्समन्स (ब्राह्मण की लड़की और नाविक का के बेटा, उपन्यास: बांग्ला से अनुवाद बारबरा दासगुप्ता ने किया)।
- 2014, रवीन्द्रनाथ टैगोर: देर रूफ देर वाइटेन वेल्त (दूर दुनिया का आह्वान, कहानी संग्रह, जिसका अुनवाद स्व. निर्मलेन्दु सरकार ने बांग्ला से किया)।
- 2015, उदय प्रकाश: दी माउएरेन फान डेलही (दिल्ली की दीवार, दो कहानी संग्रहों का हिन्दी से जर्मन में अनुवाद अन्ना पेटर्सडोर्फ और बारबरा लोत्स ने किया)।
- 2016, इनेस फार्नेल/राइनहोल्ड शाइन (संयुक्त सम्पादन) वी क्वेंरेन वीर फ्ल्युसे हम नदियों को कैसे पार करते हैं? लिटेरातुर फोरुम के दसवीं वर्षगाँठ पर विशेष तौर पर प्रकाशित।
- 2016, ए.सेतुमाधवन: पाण्डवपुरम्- दी श्ताड देर लीबे(पाण्डवपुरम्-प्रेम का शहर-मलयालम उपन्यास, अँग्रेजी से अनुवाद किया जालोमे हाइने)।
- 2017, चूड़ामणि राघवन: देर नगालिंगाबाठम (नगालिंगम का पेड-कहानी संग्रह तमिल से अनुवाद किया डीटर बी. कप्प)।
- 2018, रहमान अब्बास: दी श्ताड, दास मेर, दी लीबे (शहरए समुद्रए प्यार-उर्दू उपन्यास जिसका अुनवाद अलमुथ डेगनर ने किया)।